फ्लैचर और गिरते पत्ते

लेखनः जुलिया रॉलिनसन

चित्रः टिफनी बीके

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



पतझड़ आ चुका था और फ्लैचर का पसन्दीदा पेड़ धीरे-धीरे रंग बदलने के साथ अपने पत्ते भी खो रहा था।

फ्लैचर को बेहद फ़िक्र होने लगी।

उसने पेड़ से वादा किया कि वह उसकी मदद करेगा। पर जब पेड़ का आख़िरी पत्ता भी धरती पर आ गिरा, उसे लगा कि उसने अपने दोस्त को निराश कर दिया है ...

... पर सर्दियाँ शुरु होने के पहले ही दिन, जब फ्लैचर ने पेड़ को देखा तो पाया कि उसका प्यारा पेड़ एक चमकती-दमकती हैरत में तब्दील हो चुका है।







फ्लैचर और गिरते पत्ते

लेखनः जुलिया रॉलिनसन

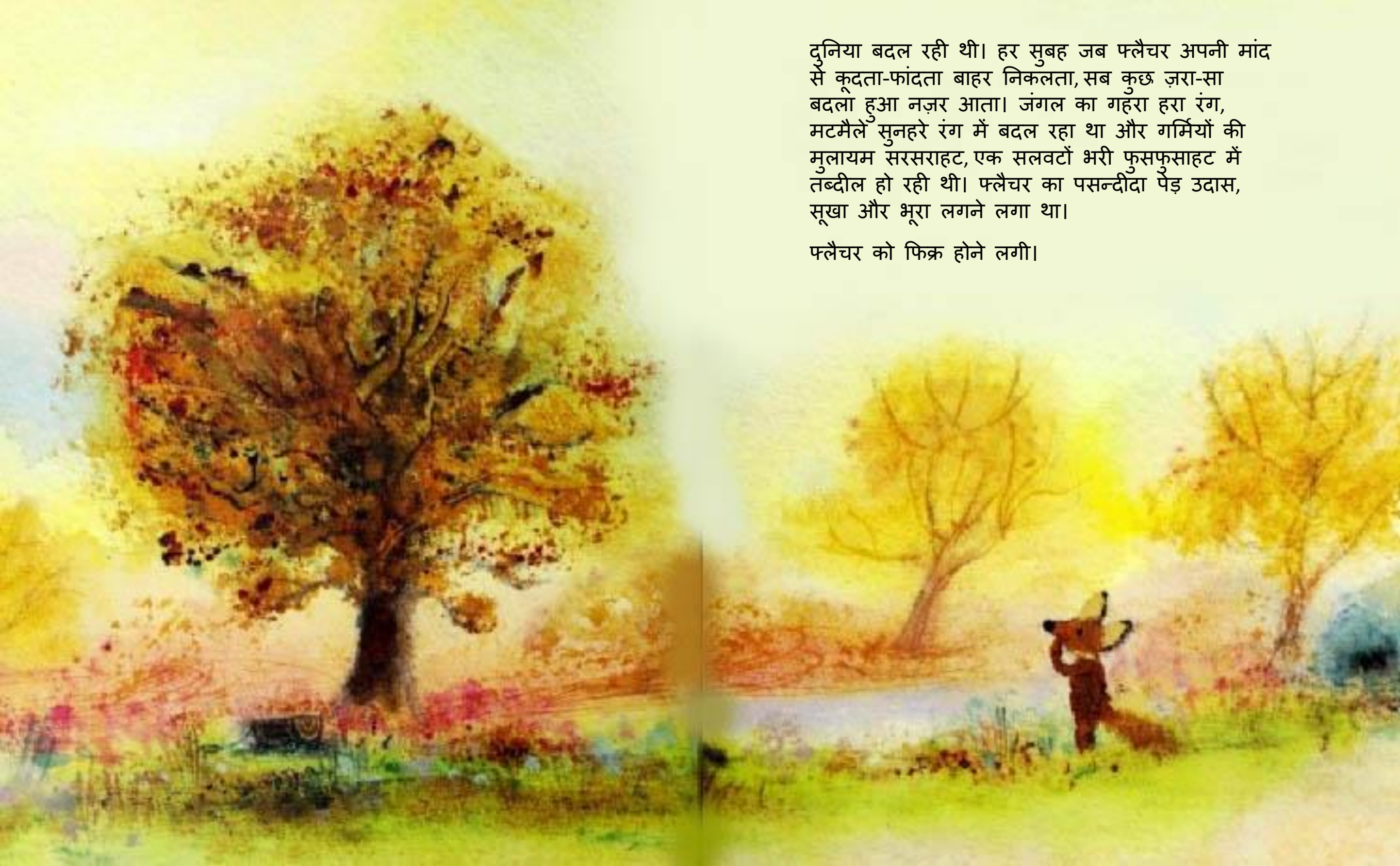
चित्रः टिफनी बीके

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



दुनिया बदल रही थी। हर सुबह जब फ्लैचर अपनी मांद से कूदता-फांदता बाहर निकलता, सब कुछ ज़रा-सा बदला हुआ नज़र आता। जंगल का गहरा हरा रंग, मटमैले सुनहरे रंग में बदल रहा था और गर्मियों की मुलायम सरसराहट, एक सलवटों भरी फुसफुसाहट में तब्दील हो रही थी। फ्लैचर का पसन्दीदा पेड़ उदास, सूखा और भूरा लगने लगा था।

फ्लैचर को फिक्र होने लगी।



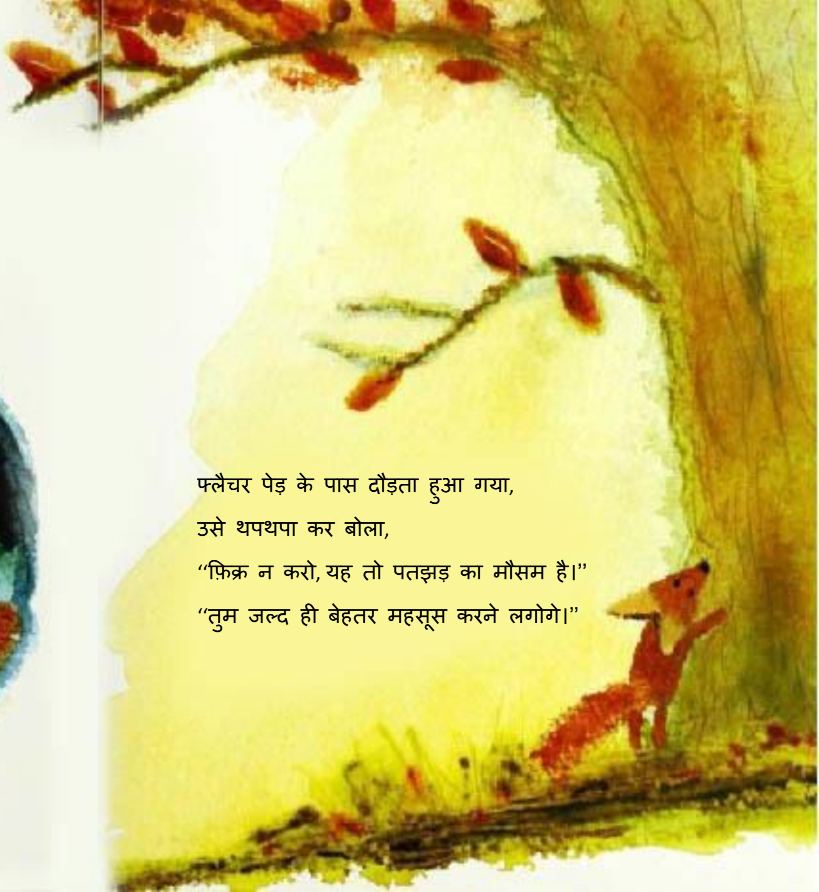
“मुझे लगता है कि मेरा पेड़ बीमार है,” फ्लैचर ने अपनी माँ से कहा।

“अरे! उसे भला हुआ क्या है?” माँ ने जानना चाहा।

“उसके पत्ते भूरे हो चले हैं,” फ्लैचर ने जवाब दिया।

“फ़िक्र न करो, पतझड़ का मौसम है ना,” माँ ने समझाया।





फ्लैचर पेड़ के पास दौड़ता हुआ गया,

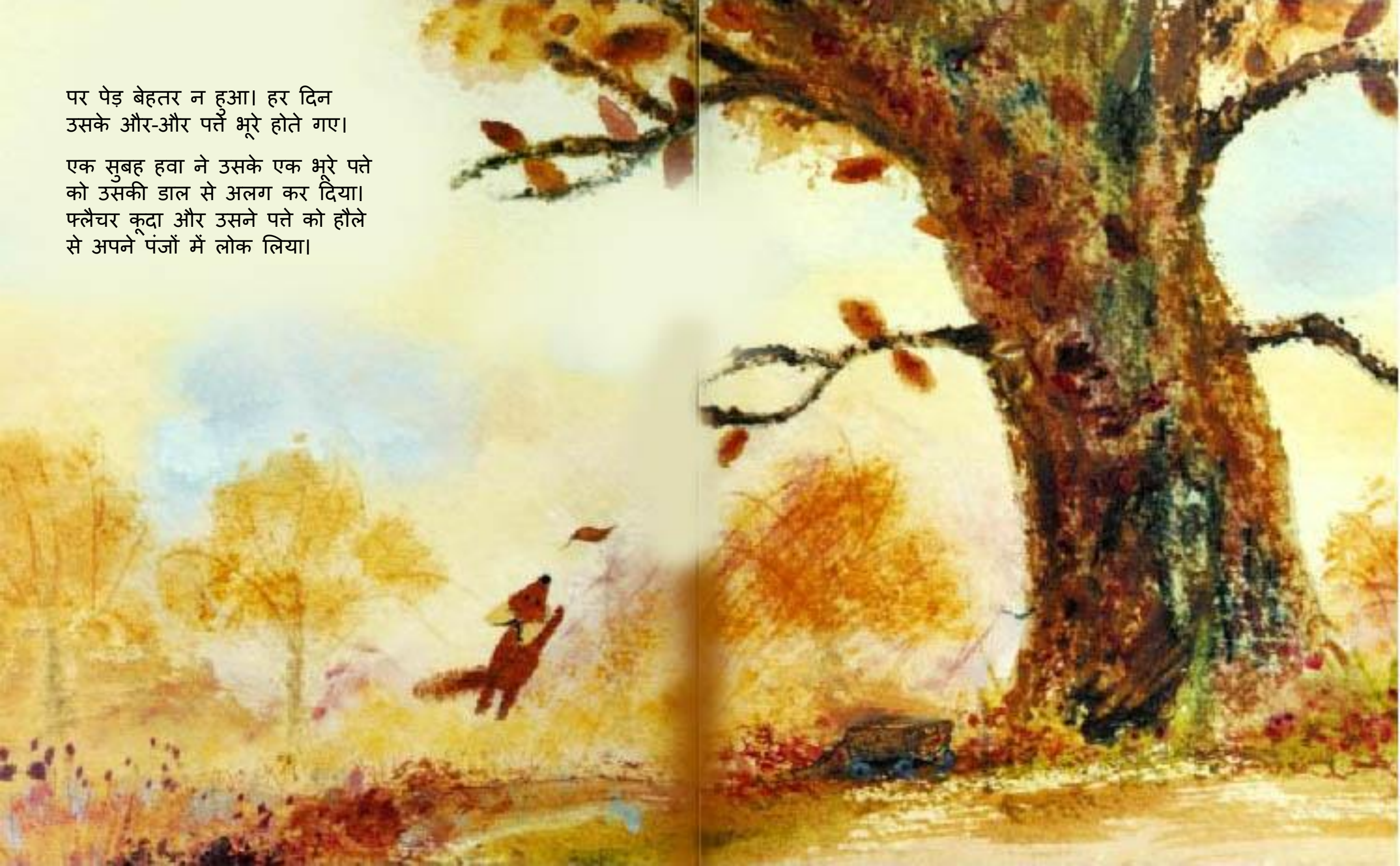
उसे थपथपा कर बोला,

“फ़िक्र न करो, यह तो पतझड़ का मौसम है।”

“तुम जल्द ही बेहतर महसूस करने लगोगे।”

पर पेड़ बेहतर न हुआ। हर दिन
उसके और-और पत्ते भूरे होते गए।

एक सुबह हवा ने उसके एक भूरे पत्ते
को उसकी डाल से अलग कर दिया।
फ्लैचर कूदा और उसने पत्ते को हौले
से अपने पंजों में लोक लिया।



"फिक्र न करो पेड़, तुम्हारा पत्ता मेरे पास है। मैं तुम्हारी मरम्मत कर दूंगा।" फ्लैचर ने आस-पास ढूंढा, और एक लम्बी घास से पत्ते को सावधानी से पेड़ की डाल पर बांध दिया।







उसी पल हवा का एक और झोंका आया जिसने फ्लैचर के सारे रोओं को हिला-सहला दिया। पेड़ से बंधा पत्ता भी आज़ाद हुआ और फड़फड़ाता हुआ फिर से धरती पर आ गिरा।

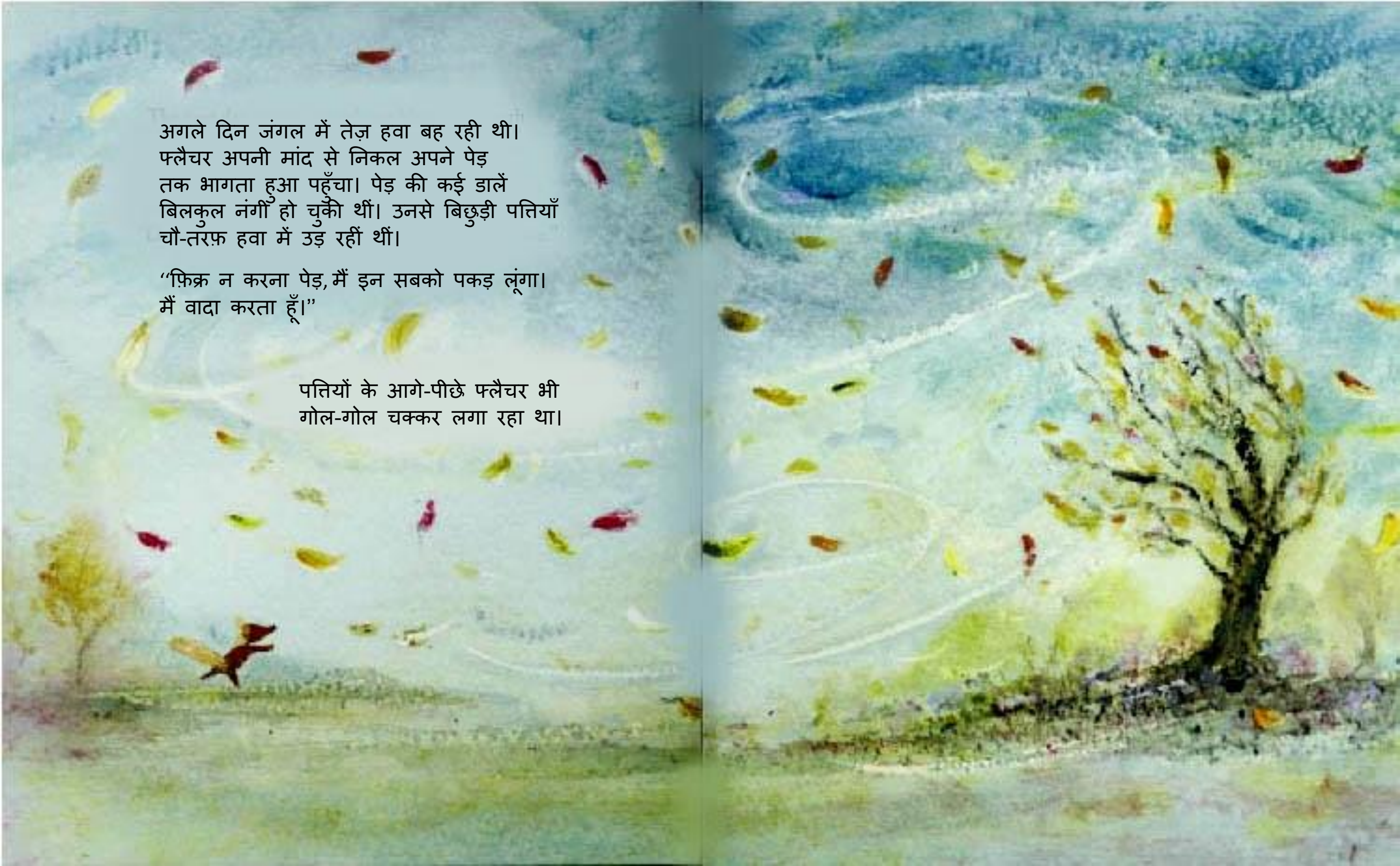
फ्लैचर ने उसे फिर से उठाया और खूब सोचा। तब उसने पत्ते को एक छोटी-सी टहनी में घोंपा और टहनी को मय पत्ते के पेड़ के तने में अच्छे से गाड़ दिया।

"अब तुम यहीं डटे रहना," फ्लैचर ने पत्ते से कहा। "इधर-उधर उड़ना नहीं है।"

जवाब में उस छोटे-से पत्ते ने हलकी सी सरसराहट की।



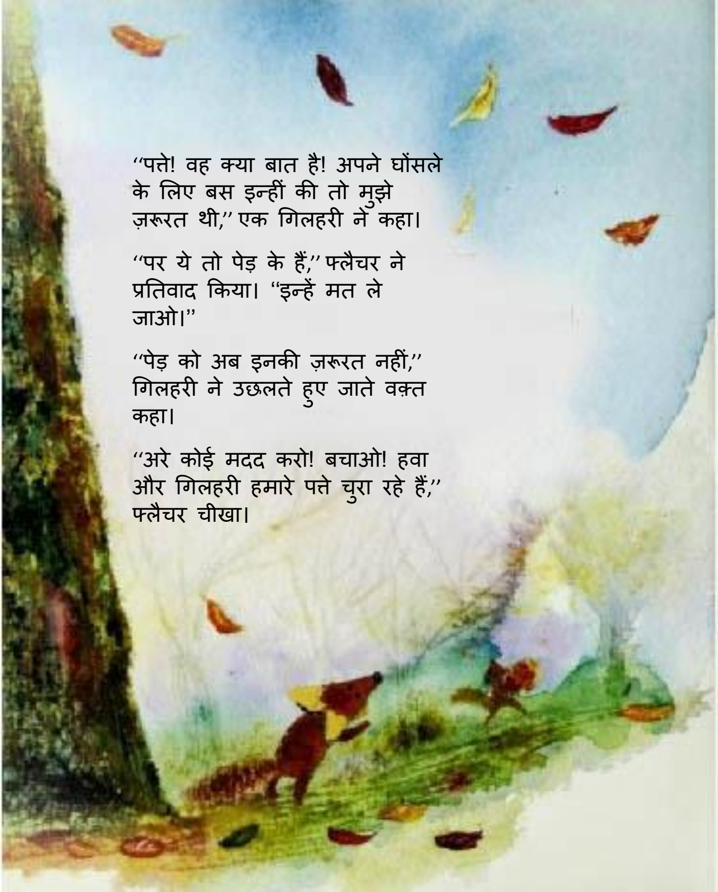




अगले दिन जंगल में तेज़ हवा बह रही थी। फ्लैचर अपनी मांद से निकल अपने पेड़ तक भागता हुआ पहुँचा। पेड़ की कई डालें बिलकुल नंगी हो चुकी थीं। उनसे बिछुड़ी पत्तियाँ चौ-तरफ़ हवा में उड़ रहीं थीं।

''फ़िक्र न करना पेड़, मैं इन सबको पकड़ लूंगा। मैं वादा करता हूँ।''

पत्तियों के आगे-पीछे फ्लैचर भी गोल-गोल चक्कर लगा रहा था।



“पत्ते! वह क्या बात है! अपने घोंसले के लिए बस इन्हीं की तो मुझे ज़रूरत थी,” एक गिलहरी ने कहा।

“पर ये तो पेड़ के हैं,” फ्लैचर ने प्रतिवाद किया। “इन्हें मत ले जाओ।”

“पेड़ को अब इनकी ज़रूरत नहीं,” गिलहरी ने उछलते हुए जाते वक़्त कहा।

“अरे कोई मदद करो! बचाओ! हवा और गिलहरी हमारे पत्ते चुरा रहे हैं,” फ्लैचर चीखा।



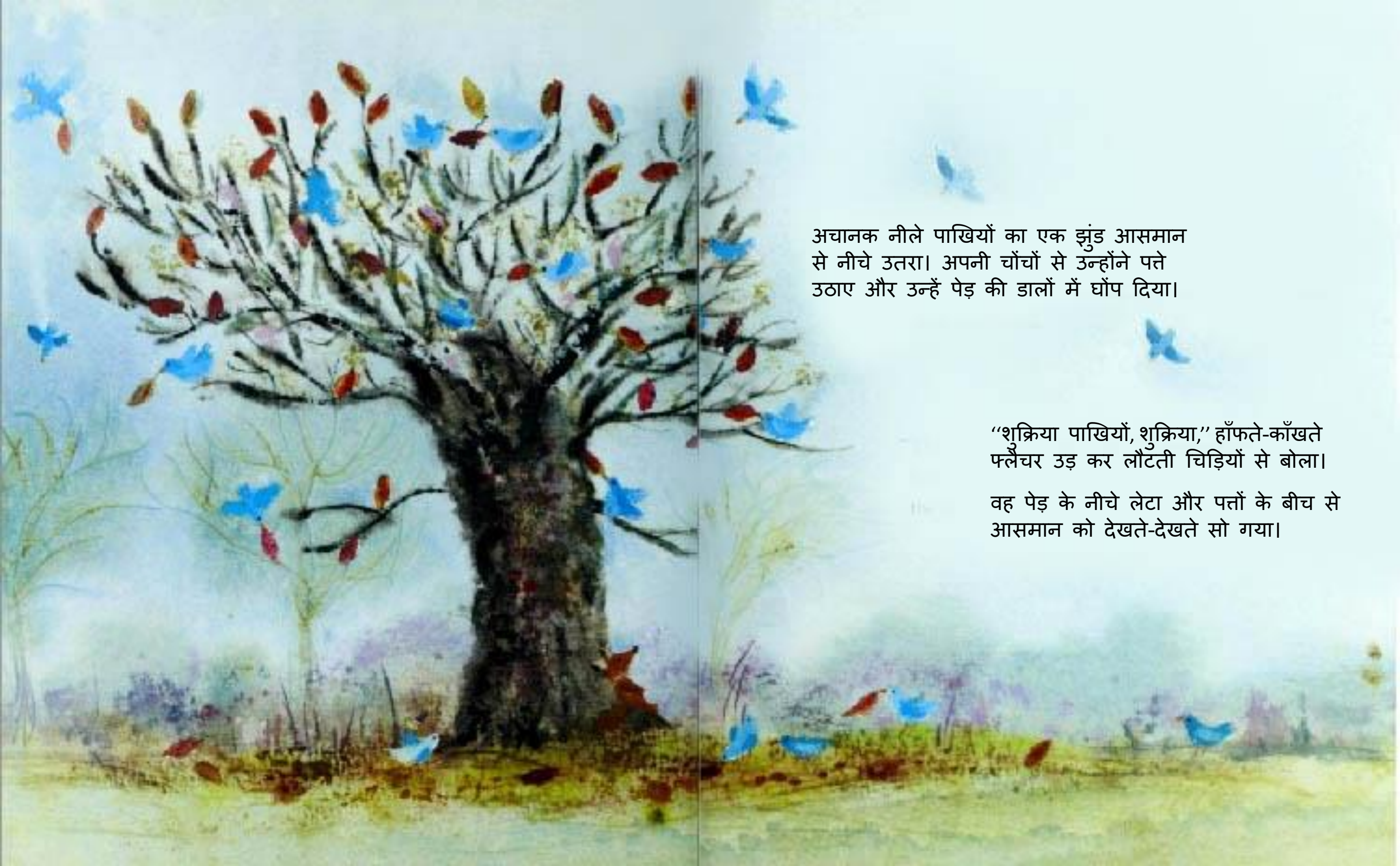
“पत्ते! वाह भाई वाह! खुद को गर्म रखने के लिए मुझे इन्हीं की तो ज़रूरत थी,” एक साही ने नीचे गिरे पत्तों पर लोट लगाते कहा।



“पर ये पत्ते तो पेड़ के हैं,” फ्लैचर ने साही के कांटों से पत्ते निकालते हुए आपत्ति की।

“अब नहीं,” साही लोट लगाना जारी रखते बोला।

“मदद करो! कोई बचाओ! हवा, गिलहरी और साही हमारे पत्ते चुरा रहे हैं,” फ्लैचर और ज़ोर से चीखा।



अचानक नीले पाखियों का एक झुंड आसमान से नीचे उतरा। अपनी चोंचों से उन्होंने पत्ते उठाए और उन्हें पेड़ की डालों में घोंप दिया।

''शुक्रिया पाखियों, शुक्रिया,'' हाँफते-काँखते फ्लैचर उड़ कर लौटती चिड़ियों से बोला।

वह पेड़ के नीचे लेटा और पत्तों के बीच से आसमान को देखते-देखते सो गया।



पर हवा बहती रही, और पेड़ की डालें नाचती रहीं।

पत्ते कांपे, हिले-डुले और फिर से आज़ाद होने लगे।

वे टहनियों से बिछुड़ इधर-उधर उड़े, थिरके

और हौले-हौले चक्कर काटते धरती पर जा गिरे,

उन्होंने फ्लैचर के नाक ओर कानों को छुआ,
और उसके सपनों में फुसफसाहट भर दी।

जब फ्लैचर की आँखें खुलीं, उसे उन पर भरोसा ही नहीं हुआ। हवा में नाचते पत्तों की छत की जगह उसे आसमान के तले नंगी डालें नज़र आ रहीं थीं। "अरे पेड़, मुझे बहुत ही अफ़सोस है," फ्लैचर रुंधे गले से बोला। "तुम्हारे सारे पत्ते गायब हैं।"

पर तब उसे एक ऊँची टहनी पर एक इकलौता पत्ता दिखा जो अब भी टिका हुआ था।



"मैं किसी सूरत में इसे हवा को चुराने नहीं दूंगा," फ्लैचर ने कहा।

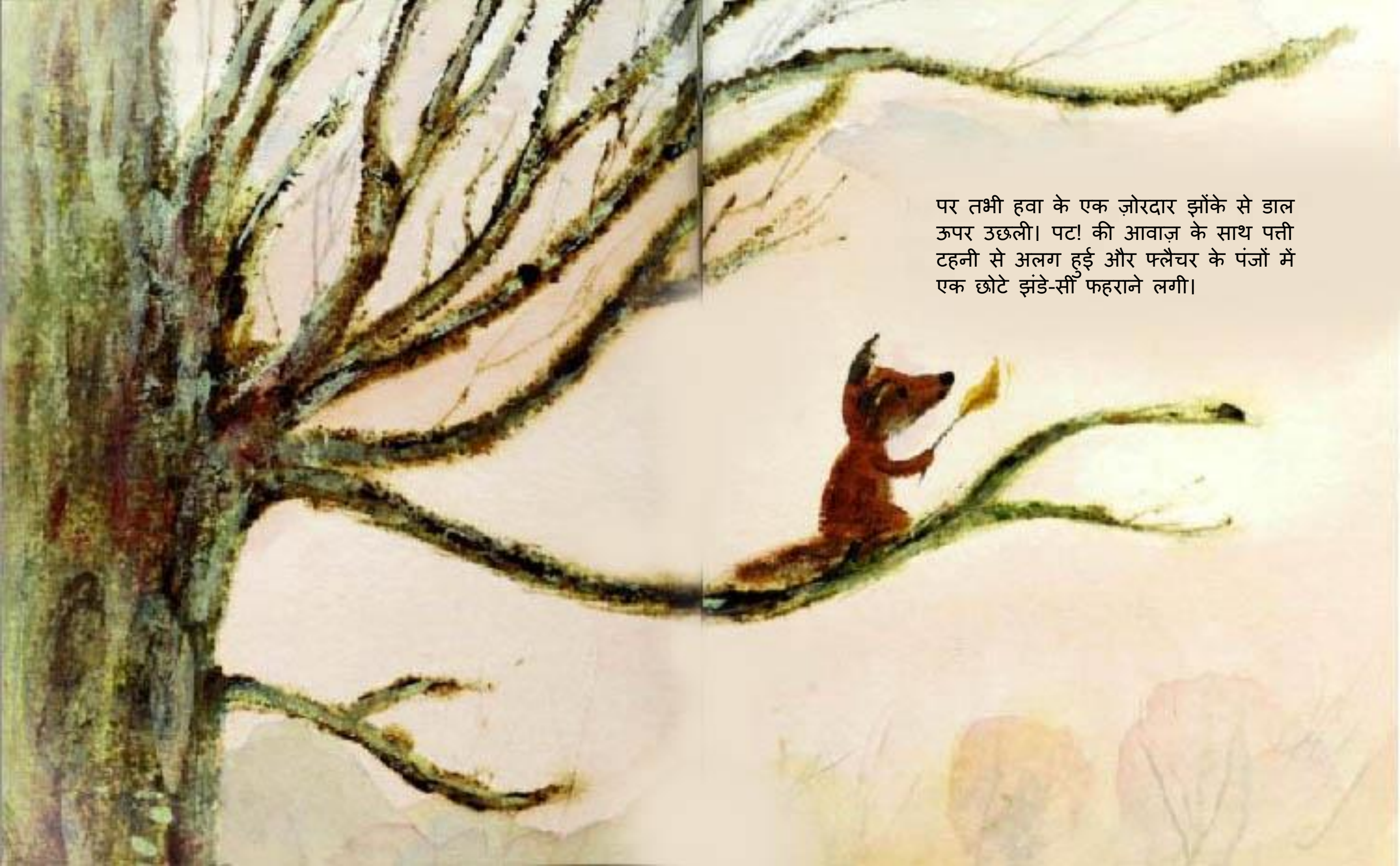
और वह पेड़ पर चढ़ने लगा।



वह रेंगता हुआ उस आख़िरी पत्ते तक बढ़ा और पत्ते को सावधानी से थाम लिया।



दिन भर हवा चलती रही। इतनी ज़ोर से कि वह डाल बार-बार उछल जाती। पर फ्लैचर ने पत्ते पर अपनी गिरफ्त ढ़ीली न की। "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा पत्ते," वह बोला। "तुम फ़िक्र न करना।"



पर तभी हवा के एक ज़ोरदार झोंके से डाल ऊपर उछली। पट! की आवाज़ के साथ पत्ती टहनी से अलग हुई और फ्लैचर के पंजों में एक छोटे झंडे-सी फहराने लगी।

फ्लैचर ने उदासी से भर पत्ते को देखा, जिसे बचाने का वादा उसने किया था। उसे एहतियात से थामे वह पेड़ से उतरा और अपनी मांद में ले गया।



उसने पत्ते के लिए एक आरामदेह बिछौना बनाया और उसे ठीक से ओढ़ा कर उस पर लिटा दिया। पर उसे खुद को नींद ही नहीं आई। वह पूरी रात अकेले पड़ चुके पेड़ के सिवा कुछ सोच ही नहीं सका।





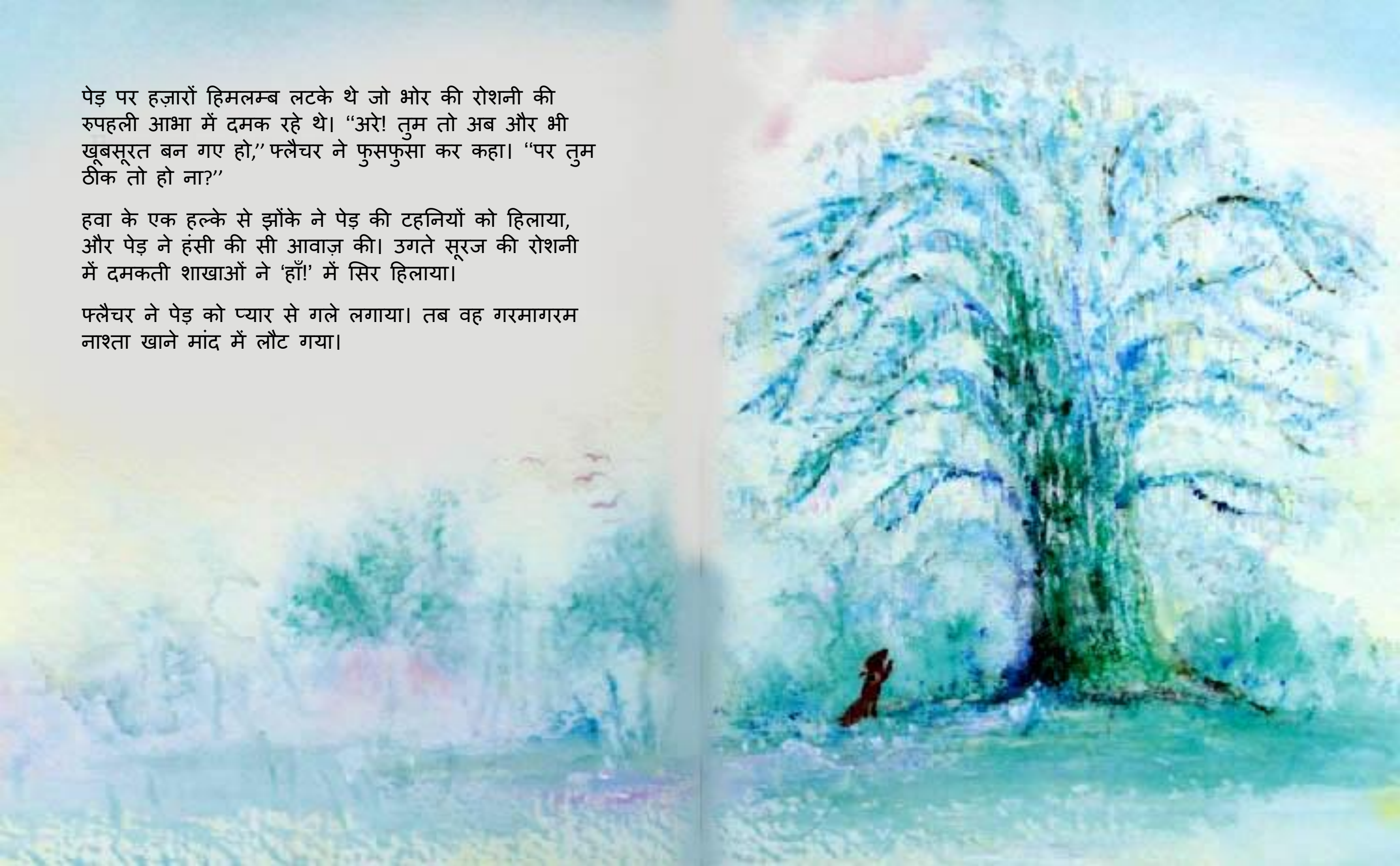
भोर होते ही फ्लैचर दबे पाँव मांद से निकला। आख़िरकार हवा थम चुकी थी। साफ़ आसमान में चाँद अब भी लटका हुआ था और ज़र्द-से तारे टिमटिमा रहे थे।

जब फ्लैचर अपने पसन्दीदा पेड़ के पास पहुँचा, वह एक जादूई नज़ारा देख दंग रह गया।

पेड़ पर हज़ारों हिमलम्ब लटके थे जो भोर की रोशनी की रुपहली आभा में दमक रहे थे। ''अरे! तुम तो अब और भी खूबसूरत बन गए हो,'' फ्लैचर ने फुसफुसा कर कहा। ''पर तुम ठीक तो हो ना?''

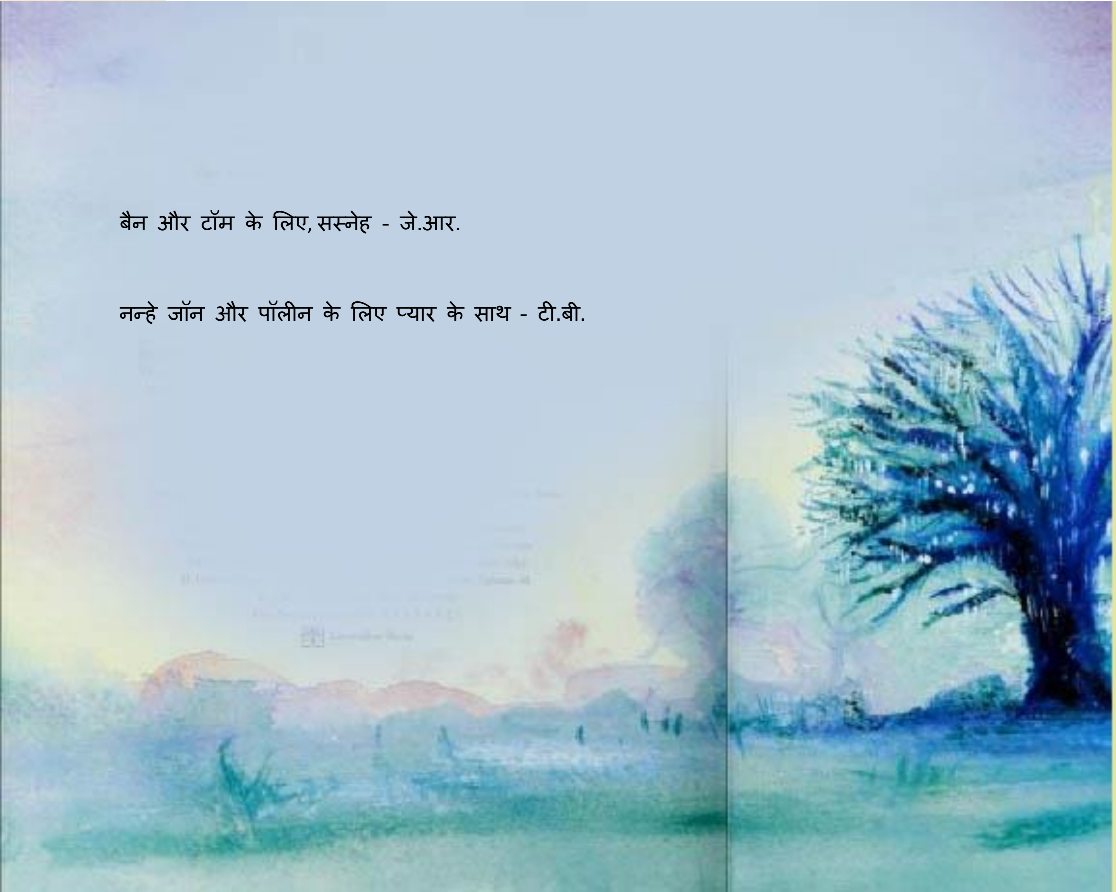
हवा के एक हल्के से झोंके ने पेड़ की टहनियों को हिलाया, और पेड़ ने हंसी की सी आवाज़ की। उगते सूरज की रोशनी में दमकती शाखाओं ने 'हाँ!' में सिर हिलाया।

फ्लैचर ने पेड़ को प्यार से गले लगाया। तब वह गरमागरम नाश्ता खाने मांद में लौट गया।



बैन और टॉम के लिए, सस्नेह - जे.आर.

नन्हे जॉन और पॉलीन के लिए प्यार के साथ - टी.बी.



जूलिया रॉलिनसन लन्दन में पली-बढ़ीं। उन्होंने साउथहैम्पटन विश्वविद्यालय से भूगोल में स्नातक किया। हालांकि बाल कविता संग्रहों में उनकी कई कविताएं छपती रही हैं, बाल-कथाओं की रचना उन्होंने गत तीन वर्षों से ही आरंभ की है। वे अपने पति ओर दो बेटों के साथ लन्दन में रहती हैं।

टिफनी बीके ने रॉयल कॉलेज ऑफ आर्टस् में अध्ययन किया तथा संप्रेषण व डिज़ाइन में मास्टर्स की डिग्री ली। उन्होंने सिंथिया रायलैंट की रचना *स्टारस् विल स्टिल शाइन* तथा डेबरा ब्रुस की रचना *बुक! बुक! बुक!* को चित्रित किया है। वे इंग्लैण्ड के हार्टफोर्डशायर में बिशप्स स्टार्टफोर्ड में रहती हैं।